* जनकफुलवारी *

ललित कृत

जिसमें

श्री रामचन्द्र आनंदकंद दशरथनंदका
यश अनेक रोचक छंदों में वर्णितहै

जिसे

श्री द्विजकुलभूषण पंडित ललिताप्रसाद
त्रिवेदी मल्लावां भगवन्तनगर निवासी
ने हरिजन व काव्यरसिकों के चित्ता-
नन्दार्थ निर्मित किया ।

दोहा

टीकाराम प्रकाशकिय निज प्रबन्ध से ताहि ।
सम्मति छन्नूलालकी लीन्ह हरषि चितचाहि ॥

ज्ञानभास्कर प्रेस बाराबंकी में छापी गई

मूल्य =)　　सन् १९०२ ईसवी

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

जनकफुलवारी ॥

दोहा ॥

गणपति गौरि मनाइ के सुमिरि सुगुरु के पाइ ।
जनक बाग बरणन करत ललित मोद सरसाइ ॥ १
जगम गात जग में शुभग जनक नगर अभिराम ।
निमि मणि जहँ राजित सदा यश प्रताप के धाम ॥ २

लीला छन्द ॥

लसति पुर सब भांति शोभित सकै को कबि भाषि । निरखि सुखमा शुभग सुरगण रहे सब अभिलाषि ॥ अतिह ऊंच अगार धवलित ध्वजन अवलित भूरि । दूरि करि

द्युति अमर पुर की शुभग सुख सों पूरि ॥ बलित कंचन धाम धामन नगन के प्रागास। ललित जारन हीर हारन भुवन तिहुँ सुख रास ॥ जड़ीं कञ्चन कड़ी बिद्रुम बड़ी द्युति के संग । रंगरंग बिचित्र सों लखि परत अद्भुत ढंग ॥ कौंध लखि चक चौंध उपजत जौन सौंध सँभार । मणिन मय बहु झारि राजति भांति२ अगार ॥ परे परदे जरी वारे हरे पीत सुरंग । करे जनु निज हाथ मनसिज भरे मोद उमंग ॥ लसति चारु झरोख झंझरी झारि हीरन पांति । भांति२ निहारि के हरषाति अमर सिहांति ॥ शुभग द्वारन कलश कंचन कलित बलित सुवेश । बसति पुर जनु अमित तनु धरि शुभ निशेश दिनेश ॥ भांति२ पताक पांति सुहाति सो फहराति । जाति केहि पर कांति बरनी निरखि सब हरषाति ॥ शुभग बीथीं चारु चौहट लसत जौन बजार । त्रिविधि त्रिधि बैपार वारे करत

नित ब्यवहार ॥ धनिक बनिक धनेश से व-
र वेश शोभन रूप । भूप से जहँ सकल पु-
रजन सबै साज अनूप ॥ राज द्वार उदार
सब जग जासु यश परगास । भासमान स-
भास जन सब जाति आवत जास ॥ भीर
भूप स्वरूप मनसिजठाठ ते बहु भांति। पाइ
सासन पौरिया की बार भीतर जाति ॥ अ-
मर किन्नर नाग आदिक भूप रूप सँभार ।
भरत आनँद आइ सब नित करत नृप दर-
बार॥बंदि मागध सूत सब शुभ बिबिधि बिधि
अभिलाषि।भूप भूषण जनक को बर रहे बिर
दहि भाषि ॥ शुभग शाला सबै गज रथ बा
जि की बहु भांति । भरीं सब सह साज रा-
जति निरखि देव सिहांति ॥

कवित्त ॥

लसतिअगारनपगारन जड़ितनग कारन
प्रमोद द्युति भारन भिरो करैं । ललित
सँभारन मुकुत गज झारन किंवारन खचित

मणिजारन घिरो करैं ॥ आवत जुहारन सु धारन महीपकाज चारणलौ दौरि द्वार द्वारन थिरो करैं। देव दिवि वारन कै भवन उजारन के नगर बजारन हजारन फिरो करैं॥१॥

दोहा ॥

लसति तौन पुरमेंबसति जगत मातु शुभवेश
बरणतछबिनिशिदिनसदा ताकीशेषमहेश१
सुनत स्वयंबर सीयको देशदेश के भूप।
तेहि पुरमें राजति सबै देव देव अनुरूप २॥
तहां गाधिसुत संगलै रामलषण द्वौ भाइ।
आइगयेद्विजवृन्दयुत अतिसुखमासरसाइ३
जनकराज सह साज सों भरि हिय अति ह रखानि। बास दियो बर भवनमें अधिकप्रेम सन्मानि॥४॥ षट दश विधि पूजन कियो भरो मोद निमिराज। करवाये भोजन विविधि हरषित सहित समाज॥ ५॥ करि भोजन विश्राम प्रभु गुरु युत रैनि विताइ। प्रात प्रात कृतिकरि सबै पुनि गुरु आयसु पाइ॥ ६॥ फूल

लेन हित कैचले फूल भरे हौ भाइ। निरखि बाग हिय राग भरि रहे मोद सरसाइ ॥ ७ ॥

॥ लीला छंद ॥

शुभग भूमि समान सुखमावान बहु विधि ठाट। लसत चारौं ओरते बर बाग की शुभ बाट ॥ बिविधि बिधिबर बेलि बगरे शोभ अ-गरे साजि। फूल फूले भौंर भूले रहे राजि विराजि ॥ लसत रौसनभरे हौसन भौंर सौसन मंडि। पेंच पेचन इश्क पेचन जाति मंजरि छंडि ॥ गुल गुलाव फिरंगसौं गुल्दाउ दी गुलबास। गुल्मगेंदे गसे गुल गुल मेंहदी नसुबास ॥ चारु चंपक चांदनी चौसर चँबेली चारु। कुन्द क्योंरा केतकी करवीर केरा झार ॥ धरे अमले विविधि गमले पांति पांतिन बेलि। भांति भांतिन करी सुखमा मनहुं भुवन सकेलि ॥ बहुत और अनूप बेली सुमन मेली पुंज। करतकेली भौंर मंडे भरे भूरि सुगुंज ॥ लसति प्यारी शुभग क्या

रिनमें अनूपम फूल । मूल सब आनंद की हरिलेत जगके शूल ॥ भांति भांतिन पांति पांतिन चारु अकलबहार । मनो सब जग जीतिवे को मार होत तयार ॥ जपा जर्द गुलाब ज्योंदी जुही जाही जाल । गुलब हार गुलाब चाबुक और गुडहल माल ॥ कासनी सुकरेलियाहु किलौ निकुक्कुटकेस । पासली प्रियवास पाटल पटनिया शुभबेस बेलि बेला बेलटाबर और भूप पसंद । बगरि बैगन बेलिया बाबी नबाल समंद ॥ नोनि यान कटेसरा नफरूम नरगिसचारु । नसत रन नाफर्म नेनी औनिवारि सिंगारु ॥ सेव ती सावनी सिव्वो सो सितारा संग । सूत वाराहौ स लादौ सूर्य्य मुखीसुरंग ॥ लगेलो श्माफि लस लोइन नीलकंठीलैन । रायवेला रेसड़ा रस रास राचे मैन ॥मोगरा मख म-लौ मीना मैन मौल सिरीन॥ मोतिया मा जूस में मिलि भे मलिन्दहु लीन ॥ हर सिं-

गारौ हौल चादनि हालि हक हरि कांति। अर्सि फूल अलोल अलि रमि गे अगस्तन पाँति॥गिनैको बहुभाँति गिनियर डेजितुरी बाक। लगेस्याह पसंद जरी गुलाबऔइष्टाक॥

सवैया॥

तांनि दीन्ह बितान से बेलि बढी उड़ैं भौंर हजारन ड़ारन से। ललिते तरु-पुँज लसे बगरे सगरे जग के सुख कारन से॥ बिकसे निकसे नव पल्लव ये प्रगटे सुखमान के जारन से। टपके मकरन्दन सों झपके लपके हैं प्रसूनके भारन से॥१ बगरे जड़े मानिक से बर फूल रहे भले गुल्मलता गसि के। डगरे परैं भौंरभरे रजपीत भये बस के रस के रसि के॥ झुमड़े झुके औ लपके ललिते जरहे चहुँ ओरनते लसिके। मनकैसे कढ़ै बढ़ै आनँद से गुल पेंचन २ में फँसिके॥ १॥

कवित्त मनहरन॥

बगरे लतान युत सेगरे बिटप बरसुमन

समूह सोहैं अगरे सुबेश को। भौंरन के भार डार २ पैं अपारस्तुति कोकिल पुकार हरै त्रिविधि कलेश को॥ कहति बनैना कछु ललित निहारिबे में उमहो परत सुख मानो देश देशको। जनक सो राजति जनक जूको बागताको नंदन सो लागे बन नन्दन सुरेशको॥

लीलाछन्द॥

धरति अलि बहुधाइ फूलन भरे पीतपराग। भिरति मधुमद मत्त गुंजति गिरति करि २ राग॥ बहत मन्द सुगन्ध शीतल पौन सबहिं सुहात। बिविधि भांति बिहंग बोलत तरुन पे मड़रात॥ कीर कोकिल सारिका बकमोर चातकपांति। भांति२ कपोत बोलत बरनि जाति न जाति॥ बहुत तरुफल भार डारन डारपर सत भूमि। घूंमि २ समीर लागत झूमि साख न चूमि॥ मंजुजाल रसालमाल तमाल सुख्मा पुंज। थोक २ अशोक साखन करत खग

बहुकुंज॥ लसत कहुँ कचनार आल अनार पनस पलास। पास सुख की रास लपटी बल्लरीस सुबास॥ करे कन्दहिं मन्द कौले अड़े आड़ ठाठ। फरी सफरी भरी द्युति अंजीर और लुकाठ॥ धरे महि बहु भरे भार चकोतरा द्युतिवंत। नासपाती और जाती बहुत फल अनगंत॥ ठाठिकै बहुभांति टाटिनपै अगूँर अनूप। देखि परत सुभाग सों सबबाग कैसो भूप॥ मधुर बोलत बोल डोलत बहुत माली लीन॥ सींचि गोड़त बारि बोरत आलबाल नवीन॥

भुजंगप्रयात छन्द॥

कहूंचारु साखै लगीं घूंमि भूमैं। उड़ैदौरि चूमैं भले भौंर झूमैं॥ टरैं पौन के योगसे फेरि घेरैं। करैं गुंज मानों पथी चारु टेरैं॥ धरैंदौरि कै मंजरी पंजरी को। गिरैं औभिरैं भौंर कै मोद जीको॥ किते भौंरके भारते फलटूटैं। मनों व्योमते चारु नक्षत्र छूटैं॥ किते पक्षि

लै फ़ूल को चोंच चापैं। फिरैं साखपै और को देखि दापैं॥ फिरैं बेलि बेलान कै मेल मेला। गहैं दौरि एला रमैं फ़ूल केला॥ कोई गुल्मवेली लखैं मंजुकेली। धरैं देखिकै पुंज क्योंड़ा चमेली॥ लसी बेरिजेजेतकी केतकीपै। करैं गुंज ते पुंजते केतकीपै॥

दोहा॥

को बरणै छबि बागकी निरखि होत अनुराग।
परमभागवालेलखत सुखयुतशुभग तड़ाग॥
अमलसुजलसरसेकमलअलिकुलकैवरबास
देखिपरतप्रतिबिंबतरु वरणतिसुमति विलास
नंदन वन की आरसी कै तडाग द्युतिवान।
बिबिधिभांतिबरणतविबुधकरतनबनतबखान२

मोतीदाम छन्द॥

लसैं चहुँ ओरन घाट अनूप। वसै खग जे बहु शोभन रूप॥ कहूँ शुभहंसनके बरबंस। फिरैं करि आनंद को परसंस॥ लसे बहु कोकहु थोक विशोक। भरे सुखमा सुखओक त्रिलोक॥

रहेवर सारस मोरन पूरि। करैं सब लोकन के दुख दूरि ॥ गसे बिकसे बहु कंजन जाल। रसे अलि डोलत कै बहुमाल॥ रँगे रँग पीत परागन रागि। गिरैं अभिरैं सुखमानहिं पागि ॥ पियें जल घाटन पै मृग वृन्द। फिरैं अति आनँद मानिसुछन्द ॥ जिहार लजात सरोवर मान। निहारि करै कवि कौन बखान ॥ ॥ ॥

दोहा ॥

लखि तडाग अनुरागसों रामलषणबडभाग।
निरखि भवानी भवन को भरेहिये अनुराग॥

कबित्त ॥

चित्रित बिचित्र सजे साज सब साजन सों शुभग सँभार भरो भूरि सुखमानते। कंचन कलित खम्भ जड़ित जवाहिरन राजै तेजवान चारु चमकीलो भानुते ॥ विविधि छबीले झाड़ झारि मणिजारन सों सुखको सँभार उपमा न मिलै गानते। बास करिबे

को सुखरास वर बाग जानि उतरि बिमान
मानौं आयो आसमानते ॥

॥ दोहा ॥

निरखिबाग अनुरागसों हियबढ़ाइहरषानि ।
सुमतिलीनमालीनसों बोले मधुरबतानि १॥
को रक्षक या बागको हम बूझत हैं तोहिं ।
सो जुकहै तौ सुमनहम गुरुपूजनहितलेहिं २
सुनेबचन मृदु रामके हिय आनँदकोघोरि ।
पुलकिगातमालीकहैं अतिनिहोरिकरजोरि३
सुमनतोरि हैंआप कहँ हमतुम्हारसबदास ।
भरिलोनेदोने विविधि लै आवैं प्रभुपास ४ ॥

सवैया ॥

बहु आब के लावों गुलाब कहौ कहौ कुंद
सुबेला समेलिनके। कहौ गेंदे गसे गसे पांखुरी
के अरु फूल नए वर बेलिनके। रँगवारे समूह
सुगन्ध सने मकरन्द भरे अलकेलिनके। स-
जिलावों प्रसूननके पुट में कहौ चम्पक के
कि चमेलिन के ॥ १ ॥

दोहा ॥

तबहिं एक माली अवर हँसिकर लगो बतान।
एकहोत है भ्रममहा को करि सकै बखान ॥

सवैया ॥

लखे मुखकंजन को भ्रमजानि चहूंदिशि ते अलि ना मड़िजाइँ। लसे अधरावर बिंबन से शुक आपुस में न कहूं लड़िजाइँ ॥ सुनेवर बीन से बैनभले ललिते मृग ना मग में अड़ि जाइँ। लला कर कोमल पांखुरी तीखीं गुल-बन की न कहूं गड़िजाइँ ॥

दोहा ॥

औरकहनलागो हरषि यक माली बर बैन।
करहुँ ढिठाईकछु महूं क्षमिये राजिव नैन ॥

सवैया ॥

मार लजावनहार कुमारहौ देखिबे को दृग ये ललचातहैं। भूले सुगन्ध सो फूले स-रोज से आनन पै अलिहू मड़रातहैं। नेक चले मग में पग है ललिते श्रमसी करसे सर

सातहैं। तोरिहौ कैसे प्रसून लला ये प्रसूनहु ते अति कोमलगातहैं॥

॥ दोहा ॥

तुमनकहौ अस प्रेमवश बिहँसिकही रघुनाथ
करतकाजगुरुहाथनिज हमआनँदकेसाथ १
सुमनलेइँगे हाथनिज तुमसबसुमतिगँभीर।
पैआयसु बिनलेहिंनहिं हरषिकही रघुबीर २
बिहँसिकहोमाली चतुर सुनिये राजकुमार।
है तुम्हारयहबागप्रभु अरु हमदासतुम्हार ३
लेहुफूलफलमोदकरि तुम त्रिभुवन के नाथ।
हमसबयुत यहबागबर आजहिभयेसनाथ४
सुनिमालिनकेबैनबर हरषि भानुकुलचन्द।
लगेलेनदलफूलफल कै उर परम अनन्द ५
पाइ मातु आयसु शुभग सखिसमूहसबसंग।
गौरिपूजिबे हेत सिय आई भरी उमंग ६

॥ कबित्त ॥

आई गौरिपूजन पठाईथी जननि सीय-देखि द्युति चम्पे के गरूर गुमड़े परैं। ललित

बलित करि अंग वर भूषणसों संगमें सहेलिन के झुण्ड झुमड़े परैं ॥ सहज सुगन्ध तन धाइ फुलवारी प्यारी दौरि २ भौंर करि शोर घुमड़े परैं । दीपति अमंद सुखकन्द मुखचन्द जानि दिन में चकोरन के बृन्दं उमड़े परैं ॥

मोतीदाम छन्द ॥

रही फबि जो सियकी छबिजानि । सकैदबि कै कवि कौन बखानि ॥ रची बिधि कौनशची सर माति । जँची उपमा नहिं क्यों कहि जाति गिरा गतिका कमला विमलानि । रहै लखि कै मन मानि गलानि ॥ तिलौ भरि तूल तिलो त्तम नाहि । सुकेसि सुकेसि कहौ चित चाहि ॥ रती भरि जो रति की छबि होत । तऊकहतो कवि को वरगोत ॥ त्रिलोक रहो सुखमा सर साइ । कछू तन ते सियकी द्युतिपाइ ॥ सकोचि सबै कविकै हरखानि । कहैसियकी सखि की द्युतिगानि ॥ सबै सुख ज्यों संग मूरतिवंत ॥ मिलै जगना सुखमाकर अंत ॥ करे तन कुन्दन

को रँग मन्द। भरे मुख आनन सोहत चंद॥ चढी भृकुटी धनु नैन सुबान। बढ़ी द्युति सी यके कानसमान॥ गुंधे वर बार प्रसून लपेटि भुजंग मनौं मणि लीन्ह समेटि॥ लसै अधरा वर नाक सुहाइ। रहे शुकबिंबहि चोंच चलाइ॥ लखेमुसक्यानिप्रभानिसुजानि।कहाचपलानि सुहीरन खानि॥भली अवलीवर दंत समान। रली शुभ कुंद कली द्युतिवान॥कपोलन गोल नकुम्कुमचित्र।लिखोजगजीतनहारचरित्र॥ लसी चिबुकौ मसि विंदु समूल। वसो असि बाल गुलाब के फूल॥ गरो वर कंबु कहै कवि कौन। भरो सुखसो सुखमानको भौन॥ लखे उर जात अनूप उतंग। गिरैंमहि श्रीफलके चित भंग॥ भुजाकर कोमल कंजसनाल। लखे तल लाजत माल प्रवाल॥लसैत्रिबली सरि ता जतुतीन। रुमावलि चारुसेवारनवीन॥कँपै कदली लखि जंघ अनूप। बनेपदकंज सुमं जुस्वरूप॥ लिये कोऊ फूल भरे शुभ थार।

करे कर कंजन चारु सँभार ॥ कोऊकर चौंर डुलावत जाति। कोऊ हँसिके मृदु बैनवताति॥ रहे सब भूषण अंगसोहाइ। कहै कवि कोछवि को सकुचाइ ॥

दोहा ॥

सखिन संग मन मोद करि गई गौरिके थान।
करि पूजन मांगो शुभग मन भायो वर दान॥
एकसखी सिय संगतजि गई लखन वर वाग।
लखे चखन वरबंधु द्वौ भरी हिये अनुराग२॥
पुलकिपसीजीनैनजलगदगदविगतसँभार ॥
आई जनक कुमारि पहँ भरीप्रेम के भार ३॥
तासु दशादेखीसखिन बिनतनमनबिनहाल।
लगीविहँसिबूझनसवै कहिमृदु बैन रसाल४॥

कवित्त ॥

कहां सुखलूटे तेरेछूटेहैं सँभार सबै तन मन हारि आई कितै करि फेरीहै। ललित निहारी कछु औरै दशा नैननीर पुलकि पसीजी भीजी सुखपुंज घेरीहै॥गदगद गरेहरेहरेऊनबोलै

कैसी औरै भांति अजबलखाति गात केरी है। मेरी सौंह क्योंन कहुएरी कहां देरी करी मौन मनि गहु आजुकौन गति तेरीहै ॥१॥ आए हैं कुमार कोऊ बाग में सुभाग भरेको-टिन मनोज सुखमानको निवेरी हौ ॥ तोरत प्रसून मेरो तोरि मन चेरो करो करो तुमहूं अनूप यहि आनँद में घेरीहौ ॥ ललित त्रि-लोक में न उपमा विलोकीजात सुनो जेसुना वौरी सुखद बैन टेरि हौ। हेरि हौ न जौ लौं तौ लौं सवे बानि हेरिहौरी हेरिहौ तौ फेरि कुलकानि को न हेरिहौ ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

॥१॥ भई मगन सुनि सखि बचन सबैतनो रुह पूरि। तेहि सराहि बोली चतुर एकभरी मुद भूरि ॥ १ ॥ सुनी कालिह आये कुँवर है कौशिक मुनि साथ। अति शोभा सोजिन लखे मनन रहे तिनहाथ ॥ २ ॥ हैं लखिबे के योगवे चलौ लखैं मुखचन्द ॥ करि चकोर

लोचन लहौ परम अनन्द अमंद ॥ ३ ॥ कछुक सकुच कछु प्रेमउर सीय सुनत वर बैन । निज पूरब अनुराग वश चकित करै निज नैन ॥ ४ ॥ सिय हियप्रेम अगूढ लखि सबैतबै हरषाइ । चलीं अग्रकरि वहै सखि जेहि देखे द्वौ भाइ ॥ ५ ॥ हेरति चहु दिशि बाग द्युति तनमन दशा बिसारि । लतन ओट तोरत सुमन लीन्हे सखिन निहारि ॥ ६ ॥

बरवाछन्द ॥

लखु इलसिय अति सुखमा करत प्रकाश । आवत है इन लतिकन अजब सुवास ॥ भ्रमर भीर करि गुंजत शोर मचाइ । दृग चकचौंधी कौंधी दीपति आइ ॥ वैलखाततनस्यामलरूप अनूप । करु काजर यह छवि है दृग अनुरूप ॥ सुनिसखि मधुर बैनमा सिय हरषाइ । कीन्हे चपल नैनमा लखत सुभाइ ॥

निमिविहाइके भागे सकुच न थोर । करै कं
जमुख पै सियनिज दृग भौंर ॥

कवित्त ॥

सखिन लखाये मन भाये सीय पाये फल
चितहि बढाये नेहनये उपजाइ कै। ललित
अनोखी अधखुली वर बांकी झांकी परम
प्रवीण सखी रही हरषाइकै॥ अंगको सँभारै
कौन संग औरै रंग रँगी आनँद रहोहै उर
अति अधिकाइकै। झलकि अनूप अनुराग
पूरि पूरबको ललकि लगी है लखैं पलक
विहाइ कै ॥

दोहा ॥

बजैंमंजुनूपुरललितकलकिंकिणिध्वनिछाइ।
कहतलषणसोंरामगुनि औरैदशाबढाइ १॥

सवैया ॥

औरै किए तनको मनको यह मोपै चमू
चढ़ि साजनलागी। कैऋतुराज सहाइ सबै
सँग कोकिल कैरव गाजन लागी ॥ द्वरि

कै धीर समीर लगे ललिते लतिका वर राजन लागी। जीतिवे को जगसाजनसाजि मनोज की दुंदभीबाजनलागी॥

दोहा॥

इमिकहिप्रभुनिजअनुजसोंचितैहितैतजिधीर।
नैहभरे देखोउदित सिय मुखशशि रघुबीर॥

कवित्त॥

भूलिगयो फूल दल तोरिबो बिलोकि रूप हिय में सराहि हरिहरषि हितौति है। कहै कवि ललित सुअंगन बिसारे प्यारे धारे नये नेह सुधिबुधिहि रितौति है। यक टक नैन बैन कढति न बंधु प्रति पलक लगे तेबहुकालय वितौति है॥ ऐसे प्रेमफंद परेसिय मुख चन्द ओर कोशल किशोर सों चकोर ह्वै चितौति है॥

दोहा॥

अतिसिय रूपसराहि हियराम प्रेमसरसाइ।
कहति बन्धुसों बैनबर गद २ गिरासुभाइ॥

जानि परत यहहैवहै जनकसुता छबिधाम।
जाहितबिरची यज्ञधनु भूपजगत अभिराम॥
लखिशोभाश्रुभसीयकीलषणकहोनहिजात।
आजुतात या बागमें अचरजसो दरसात ॥

भुजंगप्रयातछन्द ॥

॥ उड़े जातिहैं खंजये कंज कांपैं। जलौ मीनह्वै दीनते अंगझांपैं ॥ भ्रमैं भौंर भूलैं भगैं नाग कारे। सबैं पद्मके पत्रहूं जातहारे डरे कीर बेधीर ह्वै भीर भारी। तिलौं फूल त्यागैं हिये शूलधारी ॥ लताचंपकी कंपकी नाध नाधे। गिरे श्रीफलौ सोकहांबांधबांधे पके बिंब तेऊ चके भूमि टूटैं। थके दाड़िमौ केसबै गात फूटैं॥कहामैनकोदंडमोपै चढ़ाये। हने बाण तीखे सनेसान धाये। कँपै केलके से जपा फूल त्यागैं ॥ नरागैं कहूं हँसकेवंस भागैं ॥ कपोतौ थके सेज के जोर हेरैं। चके चक्रबाकौ चितै नैनफेरैं॥मयूरो महा मंद ह्वै मानिहारी। कहाकोकिला हूरही मौन धारी॥

दिनै में चकोरी रहीं चाहि हेरी। भईभांति ऐसी भली बाग केरी॥

दोहा॥

करत बतकही बंन्धुसों त्यागिलतन केजाल। प्रगट भयेकढ़ि रौसपै कौशल पाल कृपाल॥

कवित्त॥

कौनधौं बखानैवा अनूपै रूपै धामछबि कौशल कुमार बरहारी मदमार के। ललित बलित बरलोने २ दोनेकर मरकत सोनेहूँते सुखमा अपार के॥ निकरे लतान के वितान ते प्रकाश मान सीयको रहेन निज गातन सम्हार के। मेरीजानि सघन बिदारि घनटारिवरनिकरे युगुल बिधुपूरन कुमारके॥

ककुभाछन्द॥

अति अपार सुखमारघुपति की जौन सबै जग जानी। मन मानी शारद महेशके ते नहिं सकत बखानी॥ शुभम-शीश चौतनी बनी जोघनी बेलिसों पूरी। अति रूरी

बिलोकि नैननसों होत सबै दुखदूरी॥भौंरभार
कोमल सिवार से रेशम तार निकारे। लस
तिवार कोशल कुमार के अहि काजर से
कारे॥ शुभग कपोल गोल गोलन पै कुंडल
लोल लसीले। नैनऐन मद मर्दि मीन से
झलकति ललित रसीले॥ तनी भौंह वरछै
कमानसी बनी तिलककी रेखैं। जे देखैं
लेखैं शुभाग्य को फेरि जगत नहिं पेखैं॥
अधर अनूप नासिका की द्युति मैं केहिभां
ति बखानों। मनौं बिंबफल देखि धीरबिन
तीर कीर ललचानों॥ प्रगट कंजसों मंजु
मनोहर मुख शशि की द्युति भानी। शुभ
मुसकानि प्रभा निसानिसो हीरन कैसी
खानी॥ दंतावली भली बिधि राजति
रली शोभ मुख सोहै। कुन्द कली जनु
धरी कन्जमें लखि सखियुत सिय मोहै॥
चिबुक गाढ़ तिल सहित सुहायो उपमा
यहौ बिचारी। नील कन्जमें झँपे भौंरकी

जनुकछु देहँ उघारी ॥ शुभग कण्ठ मुकुता-
वलि राजति मुखछवि फवि अति भाते।
दियो कंबुकोपूरि सुधाकण चन्द बन्धु के
नाते ॥ गूढ जंत्र उन्नत सुकंधमें चारुजनेउ
लखाई। मनौ इन्द्रधनुं सहित नीलघन अति
सुखमा सरसाई ॥ शुभग कामकरि करभुज
राजति कर कंकण चित चोरै। सुमन समेत
हाथ दोनन पै धिरत भौंर चहुँ ओरै ॥ उर
मणि माल पदिक युत सोहत लखि द्विजपद
मनभूलो। जनु यमुना जल बीच मनोहर
लसत कंजवर फूलो ॥ उरश्रीचिह्न विलोकि
रोकि मन सकै कौन रसभीनी। मनौ मनो
ज सराफ कसौटी कनक रेख कसि दीन्ही॥
त्रिवलि तीर वर नाभि मनोहरलखि उरप्रेम
बढ़ायो। रूप भूप त्रयसरित तीरजनु हितकै
कूप खनायो ॥ लसत जंघ बिपरीति कदलि
के युगुल खम्भ जनुसोहैं। पद राजीव जा-
नि सन्तन के रुचिर भौंर मन मोहैं ॥

दोहा ॥

लखि नख सिख छबिराम की मगन अँगन सुधि वारि । प्रेम विवश सिय जानियक सखि मनमाहिं बिचारि ॥१॥ भयो गहरुसिय मातु, भय अति सँभारि हिय माहिं । बोली बैन चतुर सखी रघुबर रूप सराहि ॥२॥ ये कुमार छवि धाम सखि ऐहैं नित फुलवारि । कालिह सफल फिरि करबहुग अनुपम रूप निहारि ॥३॥ सुनि सिय गूढ़ गिरा सकुचि हिये मातु भय मानि । चली सखिन सह लखत तरु बेलिबाग छविखानि ॥

सवैया ॥

साथ सखीन सुता मिथिलेश की प्रीति नई हियमें अति बाढ़ी । त्यों ललिते सब देह दशातजि लाज सनेह रहीगहि गाढ़ी ॥ नैन भरे छहरे तन रोमन जाति कछूबतियां मुख काढ़ी । देखिवे को रघुनन्दन को पग्र हैक चले पुनि होतिहैं ठाढ़ी ॥

दोहा ॥

रँगी रामरँग रागभरि जाइ भवानी गेह ।
विनयकरतगदगदगिराहियकरिअधिकसनेह

कवित्त ॥

भवभव विभव परा भवकी खानी जैंति जैंति भवरानी वेदबानी करि जानी है।गावै मन बानी ताहि देत मनमानी जौन जैंति सुख दानी दास हाथन बिकानी है॥दानी कौन दूसरो जो रावरी वराबरी कै छाईरही तीनों लोक ललित कहानी है।रोसौ चहौ पोसो मोहिं दोषौ निरदोषौ जानि मोहि तौ भरोसो एक तेरोई भवानी है॥ १ ॥ दास न निरासकरे कबहूँ अवासआए जैतिजैसबजग पोषण भरैयाहै।देवऔअदेव महिंदेव नरदेव जेते पाए मोद भूरि पद सेवन करैया है॥ ललित न दूजी आश मोहि गिरिराज सुता तोहिं तजि और कौन ओढ़र ढरैया है। मेरी

मन कामना की पूरन करैया हिय आनँद भरैया मैया तुही काम गैया है॥

दोहा ॥

हरषि गौरि तन प्रगट करि सुनिसिय बैन वि-नीत।आशिष देतसुहेतकरि परमप्रीतिकीरीत

कवित्त ॥

करुणा को कन्द भव फन्द को हरन हार सुख चंद चाहि तन तपनि बुझाइ हौ । स्यामरो स लोनो सुखमासो सनोशीलनिधि एसी सिधि लैकै अति हिय हर्षाइ हौ ॥ सोचन सकोचन को मोचन के सीयहीय रोचन सो पाइ जग कीरति मचाइ हौ । सुखद सुहाइ हौ सुभगयह छाइ हौ हमारो वर पाइ मनभायो वरपाइहौ ॥

दोहा ॥

लहिअसीसमनमोदभरिबहुरिविनयबरभाषि। गई जानकी भवन निजरघुवीरहिं उरराखि १
इत रघुपति गुरुपहँ चले भरे सीय के नेह । विगत दशा निज देह की बरसावत दृगमेह २

विहँसिगाधिकुलमुकुटमणिरघुवरदशानिहारि
बूझत परमसनेह सों हियअतिमोदसँभारि ॥

कवित्त ॥

कंपतन होत स्वेद बिंदुतनरुह ठाढ़े बो-
ल्त न बैन यह कहा करि आएहो। औरसो
बरन नैन नीर ऐसे नेह भरे सांच ये बतावो
कौन फन्द परिआए हो ॥ ललित सुऐसेहंस
वंश अवतंस तुम ऐसी रीति गही रही पन्थ
हरि आए हो। कैसेहो बतावो लाल आजु
और हाल लखो सुमन ले आए हो मनकहां
धरि आए हो।

सवैया ॥

मैं प्रभु आयसुको धरि सीस गयो जबही
हितकै फुलवारी। तोरतै फूल तहां यदशाभइ
ऐसेन जाति है देह सँभारी ॥ का कहिये
प्रभुसों ललिते यह जैसीभई नई रीति हमा
री। नेह भरो ठगि यामें गयो बगिया में
लखी मिथिलेश कुमारी ॥

दोहा ॥

बिनछ्लसुनिरघुवरबचनपुलकिततनमुनिराइ
हरषभरेगदगदगरे दीन्ह असीस सुभाइ॥१॥
सुमनले आए सुमनदे रही सुमन में जौन ।
तौनमिलै तुमको सुयश भूरि भरैजगभौन ॥
मुनि अशीषगुरुसुसुखसों भरेमोददहौ भाइ ।
गुरु समीपराजतिभए पुलकिप्रेमसरसाइ ॥३

इतिश्री अवतार शिरोमणि रघुनाथजी का श्रीतिर-
हुतराज जनकजी की फुलवारी अवलोकन
श्रीकविवर ललितकृत समाप्ता ॥